सुनी-शिमला। तारासिंह नेगी,एस.एच.ओ.,पुलिस स्टेशन को राखी बांधते हुए ब्र.कु.शकुंतला।

फरीदाबाद। संजय इन्कलेव के वृद्धाश्रम में बुज़ुर्ग भाई को राखी बांधते हुए ब्र.कु.शोभा।

अहमदाबाद-ओधव। पोस्ट ऑफिस के पोस्ट मास्टर व पोस्टमैन को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कोकिला तथा अन्य भाई बहनें।

वलवाड़ा। पत्रकार महेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनीता।

वांकुरा। पुलिस स्टेशन में राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में आइ.सी., पी.एस. विश्वजीत साह, ब्र.कु. मीता तथा अन्य।

भुज-कच्छ। एयरपोर्ट पर रक्षाबंधन कार्यक्रम करने के पश्चात् समूह चित्र में सी.आई.एस.एफ. के कर्मचारी, ब्र.कु. लीना, असिस्टेन्ट कमान्डर मुकेश गुप्ता तथा अन्य।

पुरुषार्थी जीवन का सरोकार गणेश चतुर्थी

-ब्र.कु.प्रभा, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली।

मानव की समस्याओं का कोई अंत नहीं है, जब देखो, जिसके पास देखो चाहे वो साधारण है या बहुचर्चित या बहुप्रतिष्ठित नागरिक है, सभी अपने जीवन कुंडली को लेकर असमंजस में हैं। उसका समाधान कभी अंक शास्त्र, कभी ज्योतिषी तो कभी हस्त रेखा विशेषज्ञ के पास बैठकर भूत और भविष्य का रोना रोते रहते हैं। कहते हैं, क्या समस्याएं ऐसी ही बनी रहेंगी? या फिर उनका कोई समाधान होगा? वो समाधान उन्हें मिलता है लेकिन अल्पकाल का और बार-बार उन्हें उन व्यक्तियों के पास जाना पड़ता है जो खुद ही विघ्नों में फंसे हुए हैं। यदि हमें निर्विघ्न बनना है तो स्व में ही अपना समाधान ढूंढ़ना होगा। जो हमें हमारे परम सिद्धि विनायक, परम शक्ति परमात्मा पिता से संभव है। अत: आइये, हम सब इसपर कुछ चर्चा कर लेते हैं.....

सबकी बातों को समाने वाले, विपरीत परिस्थितियों या असमंजस की स्थिति में उसको बाहर न करने वाले लम्बोदर और श्रेष्ठ स्थिति का द्योतक, जो बाहर सबके साथ है और अंदर से अपने पुरुषार्थ पर बहुत अधिक ध्यान देने वाला एक दंत (जिसके दिखाने के कुछ और खाने के कुछ और), गणों में ईश जिसको हम सभी देवताओं में सबसे पहले पूजते हैं। ऐसे विघ्न-विनाशक की याद में गणेश चतुर्थी का पर्व मनाया जाता है।

अब उपरोक्त बातों के विस्तार में चलते हैं। कहा जाता है कि भक्ति मार्ग में शिव के गण अर्थात् जो परमात्मा के अति निकट आत्मायें हैं जिनसे इस सृष्टि का पूरा तंत्र चलता है। उनमें से सर्वश्रेष्ठ गण, गणेश को माना जाता है, जो गणों में श्रेष्ठ हैं, इसी का उद्धरण लेकर भारतीय संविधान में गणतंत्र की बात की गई है, जिसमें विभिन्न राज्यों के राज्यपालों व सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रपति का चुनाव किया जाता है जो कि भारत का प्रथम नागरिक माना जाता है। उस प्रथम नागरिक को सर्वश्रेष्ठ अधिकार है जो किसको भी जिय-दान दे सकता है। तो ज़रा सोचिए अगर यह परंपरा चली तो कहां से चली होगी? इसका निश्चित रूप से प्राचीन काल के किसी ग्रन्थ अथवा पौराणिक बातों से सरोकार है, इसलिए संविधान में कानून को लागू होने का यादगार एक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है जिसको गणतंत्र दिवस कहते हैं।

अब ज़रा चतुर्थी को पौराणिक रीति से देखा जाए तो गणेश को विघ्न विनाशक की संज्ञा दी जाती है, आखिर क्यों? उसने सबसे पहले अपनी कर्णेन्द्रियों पर विजय प्राप्त की जो अनावश्यक व व्यर्थ बातों से सर्वथा मुक्त है, जिसके अंदर मानसिक रूप से कोई संकल्प-विकल्प नहीं है, जिसने अनावश्यक बातों को उड़ा दिया है, इसलिए गणेश के कान बड़े दिखाए जाते हैं, जो फालतू बातों को उड़ा देता है। अब आप कल्पना कीजिए इतना बड़ा गणेश और उसकी सवारी एक छोटा सा चूहा है, क्या यह संभव है? सवारी हो सकती है? कदापि नहीं। चूहे का आध्यात्मिक अर्थ माया के रूप में है। इसका अर्थ, जैसे चूहा कहीं भी किसी भी समय अंदर घुसकर घर के सामान का नुकसान कर देता है, वह अंदर ही अंदर कुतरता रहता है लेकिन वो बात हमें तब पता चलती है जब हम उस सामान को वहां से उठा रहे होते हैं। इसी तरह पांचों विकार हमारे अंदर यदि हम सतर्क ना रहें तो घुसकर हमें अंदर ही अंदर खोखला करते हैं और हमें पता नहीं चलता। तो माया रूपी चूहे पर विजय प्राप्त करने के बाद हमें विघ्न विनाशक की संज्ञा दी जा सकती है। अब ये तो हो गई पौराणिक बातें।

अब हम इसके वैज्ञानिक तथ्य की ओर चलते हैं। मेडिकल साइंस के आधार पर क्या कोई गणेश जैसा देवता हो सकता है? मानव शरीर का धड़ तथा उसके ऊपर हाथी का सिर, तो क्या ऐसा जीवन संभव है? चिकित्सा विज्ञान इस बात को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि जब मानव अंगों का प्रत्यारोपण होता है तो यह मानव शरीर ही दूसरे शरीर के अंग को स्वीकार नहीं करता और उसके लिए कितनी सारी दवाइयाँ दी जाती हैं। अब या तो कोई कल्पना या इसका कोई मनोवैज्ञानिक अर्थ है।

मनोविज्ञान के अनुसार दुनिया का सबसे बुद्धिमान और ईमानदार जानवर हाथी है और प्राणियों में सबसे विवेकशील प्राणी मनुष्य है। इसलिए उन्होंने बुद्धिमान, ईमानदार और विवेकशीलता को जोड़कर गणेश जैसा आदर्श बनाया। हाथी कभी भी बाह्य बातों पर ध्यान नहीं देता। वो इस जानकारी से भी अनभिज्ञ है कि वो इतना विशाल है, उसकी आँखें निरंतर झुकी रहती हैं और मेडिकल साइंस का कहना है कि उसकी आँखों में सिलिन्ड्रिकल लेंस होता है जिससे वह मनुष्यों को दुगुना बड़ा देख सकता है। इसका अर्थ ये हुआ कि हम सभी को बड़ा देखकर चलें अर्थात् सभी को सम्मान देते चलें तो हमारा अपमान कभी नहीं हो सकता। इन बातों को समझाने के लिए मनोविज्ञान ने दोनों का संदर्भ जोड़ा, क्योंकि उन्हें मनुष्य की स्थिति ऊपर-नीचे दिखाई देती है। आज अगर सभी ने गणेश जैसे आदर्श को स्वीकार किया है, जिसपर किसी का कोई तर्क नहीं चलता, तो कोई बच्चा असामान्य रूप से जन्म लेता है तो कोई उसे कैसे अस्वीकार कर देता है?

जैसे ही भावना और विवेक का संतुलन हो जाता है, सबके लिए ऊँची दृष्टि हो जाती है, सबके साथ रहते हुए न्यारा रहने का अभ्यास हो जाता है, तब सभी की बातों को समाने वाले बन जाते हैं और तभी उसे गणेश की उपमा भी दी जा सकती है।

अब प्रश्न उठता है कि यदि सच्ची गणेश चतुर्थी मनाना है तथा अपने भूतकाल तथा आने वाले भविष्य के विघ्नों को नष्ट करना हैं व इसके अलावा चारो युगों में अपने आप को निर्विघ्न व धन-धान्य से परिपूर्ण करना है तो हमें भी सिद्धि विनायक जैसी सिद्धि प्राप्त करनी होगी। वास्तव में हम सारे शिव के गण ही हैं, सारे विघ्न-विनाशक ही हैं। विघ्न और कुछ नहीं, हमारे नकारात्मक और व्यर्थ सोच का परिणाम है, जो हमें जीवन भर मुश्किलातें पैदा करता है।

इसके लिए आपको अपने कुल के सबसे बड़े अभिभावक परमात्मा पिता और

शेष पेज 7 पर...